आत्मा को शरीर रूपी सिंहासन मिलता
बाप भी दादा के सिंहासन पर होते विराजमान
उनको अपना सिंहासन नही होता
ईश्वरीय संतान है हम स्मृति रखनी
जो होते ईश्वर की संतान उनकी कुदृष्टि नही होती
वो बाप से सच्चा लव रखते
ईश्वर ने मनुष्य से देवता बनाने अर्थ एडॉप्ट किया
इसलिए पतित बनने का ख्याल भी नही आये
कर्मातीत अवस्था पाने के लिये उपराम रहना
एक रस अवस्था बनाने का अभ्यास करना
मास्टर सर्वशक्तिमान कभी हार नही खा सकता
सीट छोड़ना अर्थात शक्तिहीन बनना ,
माया की धूल लग जाना
दृढ़ता कड़े संस्कार को मोम जैसे देती पिघला

ॐ शांति
मेरा बाबा